अंतरा-शब्दशक्ति

अब न रुकेंगे

काव्य संग्रह

आरती अर्गल

अब न रुकेंगे

(काव्य संग्रह)

आरती अर्गल

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-15-4

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- आरती अर्गल
मूल्य - ५५.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Ab na Rukenge by Arti Argal

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अब रूकेंगे नही

कदम बांध सकते हो कलम नही।
मुझे रोक सकते हो विचार नही।।

मन की बात जो कह न पाये, कलम ने उसे शब्द रूप में साकार करने का एक प्रयास से किया है, हर बार कदम बढ़ाने के प्रयास को जाने किन उलझनों ने जाने किन अनकहे आदेशों ने कदमों को फिर वापिस लौटा दिया। और मन को फिर एक धधकते ज्वालामुखी के रूप में परिणित कर दिया। पर कलम ने इस ज्वालामुखी को विस्फोट से बचाये रखने की राह खोज दी।और बस राह मिली तो अब रुकना नही कोशिश करेंगे

सिर्फ पीड़ा नही प्रेरणा मैं बनूँ।
अब अपनी नही जगत की कहूँ।।

आरती अर्गल

अनुक्रमणिका

1.	अपना	7
2.	ख्याल	8
3.	बेटी	9
4.	मन मेरे	10
5.	अर्जी कहाँ	11
6.	मंजिल	12
7.	खज़ाना	13
8.	आज भी	14
9.	उसका मोल	15
10.	हे परम पिता	16
11.	लोग	17
12.	सपनों के रंग	18
13.	क्या यही?	19
14.	ज्ञान वीर	20
15.	त्रिकाल	21
16.	किस्सा ए ज़िंदगी	22
17.	जुबान	23
18.	जीवनगीत	24

19. हम है शहंशाह 25
20. महिला 26
21. सीमा 27
22. नादान 28
23. मेरे शब्द 29
24. वटवृक्ष 30
25. ख़ामोशी 31
26. दुनियादारी 32

अपना

वो जो अपना है न,
बहुत अंदर छिपा रहता है।
बाहर जो दीखता है,
दुनियादारी का हिस्सा है|
इसको खुश रखना उसको मनाना,
लोग क्या कहेगे कैसे बतायेगे|
जीवन भूल जीवन बिताना,
झांको किसी की आखो में |
सब ठीक है कहना और,
दर्द को छुपाना आप सुनाओ|
कहकर आपसे कहे झूठ को छुपाना,
यही सबके हाल है |
कुछ है कुछ और की तलाश है,
इसी कशमकश में कुछ न रहे पास है ।

ख्याल

किसी ने पूछा तुम्हें इस सब से क्या मिलेगा ?

बड़ा अच्छा लगा सुनकर चलो ध्यान तो है|

क्या फायदा आँख फोड़ती रहती रात जाग कर |

कितनी फ़िक्र है मेरी मन फूल के कुप्पा हो गया |

फिर एक प्रश्न आया नोकरी में फायदा पैसे बढ़ेंगे?

नहीं जबाब सुनते ही गजब हो गया |

सारा प्यार पलभर में ही हवा हो गया |

बंद करो ये कविता सविता समय पैसा बेकार|

इससे अच्छा तो शुरू करदो आचार बड़ी व्यापार।

चार पैसे घर आयेगे अपन मुफ़्त में खायेगे ।

तुम्हे भी अच्छा लगेगा कुछ काम तो किया |

बेकार में ही वक्त बर्बाद नही किया |

तुम्हारा ख्याल है इसलिए कहता हूँ |

वर्ना मुझे क्या मैं तो चुप खड़ा रहता हूँ |

बेटी

पिता की शान,भाई की जान,

माँ का अरमान,सपनो की उड़ान।

मैं न कर पायी रंगों से पहचान,

बेटी दूँगी तुझे अब खुला आसमान ।

जिस पल बेटी,

बेटी की माँ बनती,

हर माँ बीता जीवन जीती।

मेरे रहे ख़्वावअधूरे

तेरे होंगे पूरे,

बेटी सबकी खुशियों में झूले।

जिस पल घर मे बेटीआती,

पिता को मानो फिर माँ मिल जाती।

भाई के पल-पल की वो साथी,

माँ के मन की बनती पाती।

सारे रिश्ते बखूबी निभाती,

आँगन में खुशियों सीछाती।

मन मेरे

गिरह न बांधों
मन मुक्त मिलने दो
लोटता नही बीता वक्त।
वक्त मिला मन मिलने दो।
साथ गर अपने,अपनों का
खुशनसीबी खुशनसीबों की।
बहता पानी मैल बहाता ।
नयन,नदी उज्ज्वल
कर जाता।
ठहरा,गर् जमा जाने
क्या हो जाता।
बहने दो तरल सरल
भाव सरिता को।
प्रेम पुष्प कुसुमित अमरबेल चढ़ने दो।

अर्जी कहाँ

होता वही जो तूने लिखा ।
कभी अपना ही लिखा।
शायद तुझे गलत लगा ।
चाहा पर मिटा न सका।
खुद जवाब दे खुदा।
है मासूम के सवाल
कौन से टूर गये पापा
कितनी दूर गये पापा
मोबाईल अभी तक
क्यूँ है बिगड़ा हुआ?
ये निगाह तुझे भी
सालती तो होगी
भूल अपनी तुझे भी
कभी सताती तो होगी
माँ की व्यथा छोड़
नन्ही व्यथा रुलाती होगी।
कलम का लिखारबर से मिटाये
रब तूने लिखाकहाँ से मिटवाये
कहाँ जाके अपनी अर्जी लगाये ???

मंजिल

मिल गयी मंजिल फिर राह
कहाँ बाकी ?
कदम गर रुक गये तो चाल
कहाँ बाकी ?
ठहर गया पानी तो बहाव
कहाँ बाकी ?
रुक गयी पवन जहाँ साँस
कहाँ बाकी ?
चल ना, जिंदगी को पहचान
कहाँ बाकी ?
साँस गर न लेनी हो,जान
कहाँ बाकी ?
न रूक,मंजर को देखने ताब
तुझमें कहाँ बाकी ?
यूँ ही कट जायेगी जिंदगी अब
न मुझमे कुछ बाकी
न सफ़र रहा बाकी।

खजाना

खोला खजाना मालामाल हो गये
जाने कितने रिश्ते खुशहाल हो गये ।
एक थपकी
एक उँगली
एक हाथ
जाने कितनी सौगात दे गये।
खोला खजाना मालामाल हो गये।
कुछ किस्से
राजा रानी
देव दानव
प्यारे दिन-रात उधार दे गये
खोला खजाना मालामाल हो गये।
कुछ झिड़की
लाड़ मनुहार
लड़ाई झगड़ा
प्यार दुलार जीवनाधार दे गये
खोला खजाना मालामाल हो गये।
सुख दुःख
अपना पराया
क्या खोया
क्या पाया सब निराधार हो गये
खोला खजाना मालामाल हो गये
जाने कितने रिश्ते खुशहाल हो गये।

आज भी

आज भी नारी
न पूरी जीती न हारी।
जन्म लेती बेटी
कहते है अमानत किसी और की।
कदम बंधे नही
चले मगर मर्जी किसी और की।
बोलने रोका नही
भाव होते मगर किसी और के।
नोकरी कहाँ मना
तनखाह उसकी नही किसी और की।
घर मिले मगर
तख्तियाँ उसकी नही किसी और की।
ज़िन्दगी वो जी रही
चाहते उसकी नहींकिसी और की।
शिकवा नही फिरभी
प्रकृति से ही बनीकिसी और की।

उसका मोल

सूरज दुश्मन सा बन आता
तपती धूप में बदन झुलसाता ।
बदन उघारे काम वो करता
नही छाहँ की मांग वो करता।
कितने भवन कितनी मंजिल
बने गवाह यही श्रम अंजलि।
सड़के जाने कितनी है नापी
बन जाती विश्राम की साथी।
श्रम सीकर दे जाते शीतलता
वृक्ष पर्ण कभी डुलाते पंखा।
सबकी छाँह बनाते जाता
खुद को बिना छाहँ ही पाता
नीव के पत्थर सा वो बनता
नही कही फिर नजर आता
क्यों न हम अहसान माने
कभी प्रेम से उसको जाने
प्यार भरे दो बोल बोलकर
कितना वो अनमोल जता दे।

हे परम् पिता

हे परम् पिता नीतियाँ अपनी अब दें बदल।
पिछले अगला छोड़ जब करे तब फल।
किसने देखा पूर्वजन्म, जाने कौन भविष्य?
भला -बुरा जो जब करे,पावे तुरत वो फल।

तुम ही कर्ता, तुम नियन्ता, तुम ही विधि विधान।
क्यूँ गठरी कर्मो की सर पर रख घूमे इंसान।
बिन मर्जी पत्ता न डोले है सबको यही ज्ञान।
कैसे अच्छे बुरे कर्म करता तेरा ये इंसान।

समझ न पाये हम है इंसान मूरख अज्ञान।
कोई भोगे सुख सारा, फिरता कोई मारा-मारा।
न्याय समझ न आये,कर्मफल है जो कहलाये।
हे परम पिता परमेश्वर, आप सर्वज्ञ सर्वेश्वर।

राह हमें आप सुझाये,डिगे न पाये विश्वास हमारा।

लोग

कैसे अंदाज बदल लेते है
लोग।
कभी तुम से आप बनाते
लोग।
वक्त पे गधे को बाप बनाते
लोग।
आगे जा गधे को लतियाते
लोग।
भूल जाते है ऊपर भी एक
नजर।
अपने ही से अपने को छुपाते
लोग।
भीड़ में गुम अपनों से अलग
लोग।
जाने किस की तलाश में बढते
लोग।
जड़ो को मिटा टहनी पकड़ते
लोग।

सपनों के रंग

हाँ अब जीने लगी
सपनो के रंग सजोने लगी
भावों को स्वरदेने लगी
कल तक की पाषाण मूरत
मुखर होने लगी।
बेटी उसकीबड़ी हो गयी
जीने की वजह मिल गयी
सपने सारे उसके लिये
जिया जो मैंने, वो न जिये
जो न कर पायी थी वो बेटी करे
पढ़े लिखे
मेम साहब बने
मैं कहती मालकिन को
वो किसीकी मालकिन बने
कोई उसको मेमसाहब कहे।

क्या यही?

सब कुछ खाली हो जाता है
जब भाव भरम मिट जाता है
एक सन्नाटा बिछ जाता है
मन बोझ भरा हो जाता है
अपने अपना खो जाता है
अनुत्तरित प्रश्न उठ जाता है
हम किसके कौन हमारा है
क्या झूठा सब सरमाया है
काया को सेकर रखता है
माया संजो कर रखता है
अंत समय जब आता है
कुछ भी साथ न जाता है
जिनको तू अपना कहता है
दिनरात जिन्हें तू देता है
जीते जी ही बिसराता है
गयी साँस तुझे जलाता है।
क्या यही मानव जीवन कहलाता है?
या कालचक्र चकराता है?

ज्ञान वीर

उठ जाग उठो ज्ञानवीर
अब अपना मान बचाना
हम स्वयं प्रज्वलित दीपक
प्रकाश जगत को है देते
कोरी माटी को गढ़ देते
ज्ञान कलश हम भर देते
छोटे छोटे कदमो से आते
बढ़ते बढ़कर आगे जाते
ये जीत हमारी ही होती
हम खुद मन मन हर्षाते
मात पिता है प्रथम गुरु
हम दूजे गुरु कहलाते।
गुरु है गुरुता रखे कायम
अंधियारो में हम न हो गुम।

त्रिकाल

अख़बार में समाचार आया

कोई कोई ही पढ़ पाया

फिर तेरे न्याय ने रुलाया

फूल को पानी में डुबाया ।
सर्वशक्तिमान तू तेरी माया
नन्ही जान न बचा पाया
माँ बने एक दूजे के नाम
रहते थे एक दूजे को थाम

बढ़ रहे थे जो नन्हे कदम

नन्हा सनी अब गया थम
अब न लौटेंगे उसके कदम।

दोष रखे अब किसके नाम?

फिर उठता वही एक सवाल

सर्वशक्तिमान वो क्यूँ ये हाल?

नन्ही बिन माँ बच्ची है बेहाल
सहारा बना जो ले गया काल।
कौन पूछेगा अब नन्ही हाल।
आप ही कहे आप है त्रिकाल ।

किस्सा ए ज़िंदगी

कहे, न कहे।

रुके,न रुके।

चले,न चले।

करे,न करे ।

लम्हा लम्हा दिन दिन
साल दर साल गुजरे।
बस कुछ इसी तरह।
गुजरती गयी ज़िंदगी।
सोचते है अब भी यही।

ज़िन्दगी जी,जी ही नही।

किस्सा ऐ ज़िंदगी

सभी का यही
कोई कह गया
कोई कहता नही।

जुबान

सदियों के नातें लम्हों में खत्म।
तीखी थी जुबां कर गयी सितम
रिश्तों के गूँथे तार हुये तार तार
मणिमाला मनके हुये मानों मनके
करो लाख जतन जतन जतन के
अब न बनी माला बिना गठन के
विचर ले अन्तस् आत्ममनन से
विरह न दे कष्ट स्वजन सजन से
नियामत दी अपने परम् पिता ने
बोली सभी को,भाषा हम इंसा ने
आज करे एक प्रण पूर्ण प्राण से
नम्र नरम भाषा उचारे जुबांन से।।

जीवनगीत

चाँद सूरज सुनाये नित जीवनगीत।
घटने बढ़ने उदित अस्त की रीत। ।
कभी उजाला कभी अँधेरा।
जीवन मानो बस रैन बसेरा।।
दिन दिन साल जो बीता।
कुछ भरा,और कुछ रीता।।
गया जो वो भी था अपना।
नया फिर दिखाता सपना।।
आओ हमभी कदम बढ़ाए।
तेरे खातिर हम झुक जाए।।
सूरज चाँद सा साथ निभाए।
एक दूजे के पूरक बन जाए।
रीत यही हम सब अपनाये
दुनिया सबको प्यारी होजाये।
नव वर्ष नित नव मंगल लाये
सुख शांति चहुँ ओर छाये।।

हम है शहंशाह

दिल हमसे लगाकर तो देखो ।
सच्चे है प्रीत निभा कर तो देखो।
नही दिखावा,नही कोई होड़।
अपनाये जो प्यार से टूटे न डोर।
अपना न कोई सारा जहां हमारा।
अपनी दुनिया के हम है शहंशाह।
कोई क्या कहता नही है परवाह।
न समझो हम तुम कोई गम नही।
हम भी किसी से कोई कम नही।
ख़ैरात उपहार अहसान न करना।
हम भी है इंसा बस इतना समझना।
रचियता हमारा भी वही एक ईश्वर।
कुछ है कमी तो कहीं पूरी कर दी।
तभी तो हमें दिव्यांग माना।
हममें कुछ खास ये दुनिया ने जाना।

महिला

महिला सी सहनशक्ति
और तरुओं सा त्याग।
अंबर सी आच्छादित होकर
करे सर्वश्व निहाल।
वर्षा की बूंदों सी बिछती
बनती जीवन धार।
रवि की किरणों सी फैलाती
जीवन में उल्हास।
शशि सी शीतलता बिखेरती
जीवन बने मधुमास।
चमकते तारो सी झिलमिलाती
मन को देती आस।
नारी तुम प्रकृति हो सारी
देती हो विश्वास।
जन्मदायिनी बन जन्मती
करती सृष्टी विस्तार।
एक नही सब दिन वारती
नारी महिमा अपार।

सीमा

गीत और स्वर के बीच
कोई ध्वनि है
शायद प्रतिध्वनि है
नही गूंज है
जो भटकती है
शब्दों की पकड़ में
नही आती।

मोती और सूत से परे
कोई चमक हैं
एक आब है
या जगमगाहट है
जो गूँथने में
नही आती।

चुक जाती है
भटक जाती है
शायद रुक जाती है
सीमा से टकराती है
दिल में उठती है
पर बयां नही हो पाती है।

नादान

बहुत प्यारी भोली नादान थी वो,
खिलखलाती थी झरने की तरह,
उड़ती फिरती थी तितलियों की तरह,
मासूमियत फ़िदा थी उसकी मासूमियत पे,..

चन्दा को मामा कहती तारो से बात करती,
सुनहली किरणे सूरज कीउसको भाती,
किसी की जान किसी की शान है वो,
अपने अपनों का सपना अरमान है वो,..

काली एक नज़र ने था उसको मिटाया,
किसी भेड़िया का पड़ा उस पे साया,
नादा वो भोली समझ भी नपायी,
किसी नरपिचाश ने उसे नोचखाया,..

मगर वो भोली बड़ी हो अबगयी,
हँसी उसकी जाने कहाँ खो गयी,
मासूमियत उसकी सहम सी गयी,
चाँद सूरज से अब वो डरने लगी,

कुत्सित हवस ने था उसको मिटाया,
एक बच्चे से उसका बचपना छिनाया,
हमे जागना होगा अपने नादानों लिये,
अच्छे बुरे स्पर्श के भेद बताने होंगे,...

हिचक न रहे कुछ पूछने कुछ बताने,
वर्ना कैसे बचायेंगे हम अपने नोनिहाल,
जागो चेतो कोई भोली सहम न पाये,
नादानी हमारी उस पर न बीत जाये,...

मेरे शब्द

लिखती नही, जज्बात बया होते है
मेरे शब्द, मेरे जख्मो की दवा होते है।

शब्दों की दोस्ती तो कारगर होती है,
साथ देती है मन से हँसती रोती है |

झूठ बात,नहीं सच्चाई बयाँ होती है,
अंतस् में छिपी पीड़ा व्यक्त होती है ।

चाह किसी सराहना की नही होती है,
ज्वालामुखी न बनूँ,ये आस होती है।

वटवृक्ष

चाहत सभी की रहती है,
एक वटवृक्ष की छाँव मिले
तुम चिंता क्यों करती हो,
मै हूँ न, ये अहसास मिले
कोमल मन के भावो को,
एक प्यार भरा आधार मिले
तुम को सब भार सौप दूँ,
मैं ऐसा मुझे अधिकार मिले
तुम शक्ति बनो साथी मेरे,
गर्व भरा ये भाव मिले
जीवन की आपाधापी में,
मैंने अपने को खोया है
चाहत मेरी है जीने की,
जीने का अब अधिकार मिले।

ख़ामोशी

कुछ सवाल और कुछ जबाव थे
उसकी ख़ामोशी में।
टूटे सपनो छूटे अपनों की यादे थी
उसकी ख़ामोशी में।
रुकी हँसी और सिसकियो की कसक थी
उसकी खामोशी में।
बहुत शोर और सन्नाटा बिखरा है
उसकी खामोशी में।
अहसासो को ख़ामोशी से
बया किया था उसने
समझ नही पाया मैं ही
आँखो से तो सब बयां किया था उसने।
डोली से अर्थी के सफर को
खामोश जी लिया उसने।
जाते जाते मुझको ही
खामोश कर दिया उसने।

दुनियादारी

वो जो अपना है न
बहुत अंदर छिपा रहता है
बाहर जो दिखता है
दुनियादारी का हिस्सा है
इसको खुश रखना उसको मनाना
लोग क्या कहेगे कैसे बतायेगे
जीवन भूल जीवन बिताना
झांको किसी की आखो में
सब ठीक है कहना और
दर्द को छुपाना आप सुनाओ
कहकर आपसे कहे झूठ को छुपाना
यही सबके हाल है
कुछ है कुछ और की तलाश है
इसी कशमकश में कुछ न रहे पास है।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - आरती अर्गल

जन्म - 5 नवम्बर 1962, दमोह

माता - श्रीमती सत्भामा श्रीवास्तव

पिता - श्री पी.एम. श्रीवास्तव

पति - श्री प्रमोद अर्गल

शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी, अग्रेजी), बी.एड. सामान्य एवं विशेष श्रवण बाधित शिक्षण, एम.एड. अध्ययनरत्

कार्य - शिक्षा विभाग

पता - अर्गल हाऊस, 1707/1 जय नगर गढ़ा रोड़, जबलपुर (म.प्र.) 482002

प्रकाशन - विभिन्न पत्र, पत्रिकाओं, काव्य संग्रहों, समाचार पत्रों में रचनाओं का प्रकाशन एवं काव्य संग्रह एवं कहानी संग्रह प्रकाशाधिन

सम्मान - हिन्दी शब्द शक्ति सम्मान, हिंदी साहित्य गौरव, साहित्य सेवा रत्न, हिन्दी सागर सम्मान - विश्व हिन्दी रचनाकार मंच वं मध्यप्रदेश हिन्दी सेवा समिति आदि संस्था द्वारा, दिव्य परमार्थ अलंकरण आदि।

संबद्धता - जागरण, अंतरा विश्व हिन्दी मंच, गूंज कवि संगम

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-15-4

मूल्य- 55/-